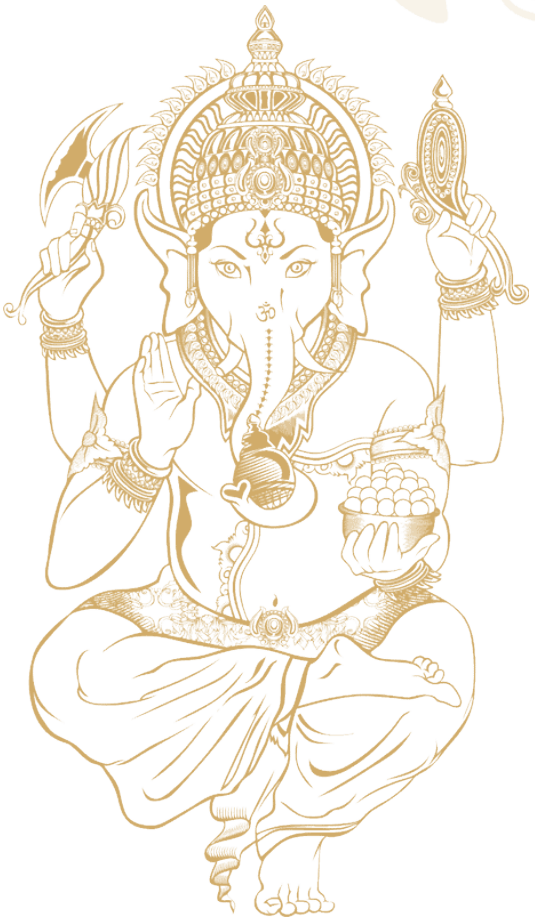

18 Mar 2026

10:57 PM

Hapur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121888701

तिथि 18/03/2026 **समय** 22:57:00 **वार** बुधवार **स्थान** Hapur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 28:43:00 उत्तर **रेखांश** 77:47:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:18:52 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	10:23:17 घं
वेलान्तर	00:08:05 घं
सूर्योदय	06:25:38 घं
सूर्यास्त	18:28:45 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	शुभ
करण	नाग

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	दा-दामिनी
पाया(रा.-न.)	लौह-लौह
होरा	शनि
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

गुरु 4वर्ष 5मा 12दि

गुरु

18/03/2026
30/08/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	18/03/2026
चन्द्र	30/04/2027
मंगल	05/04/2028
राहु	30/08/2030

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 1मा 10दि

भ्रामरी

18/03/2026
29/04/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	18/03/2026
संकटा	28/08/2026
मंगला	08/10/2026
पिंगला	28/12/2026
धान्या	29/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:43:09	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	---	0:00			
सूर्य			03:53:50	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	मित्र राशि	1.50	कलत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			29:37:30	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	सम राशि	1.63	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	18:28:47	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	सम राशि	1.11	मातृ	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व		14:29:10	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	सम राशि	1.28	पुत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			20:57:20	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	0.96	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			21:01:18	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	उच्च राशि	1.25	अमात्य	कलत्र	विपत
शनि		अ	09:40:02	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.41	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु	व		14:44:59	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		14:44:59	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

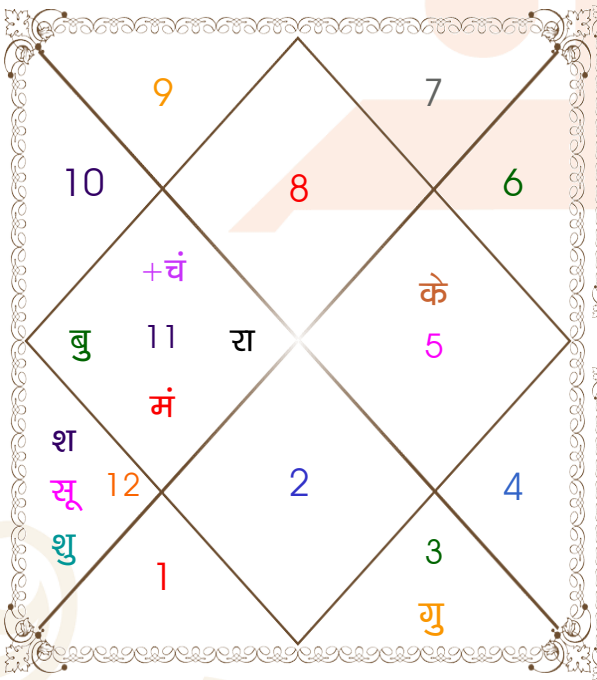

चन्द्र कुंडली

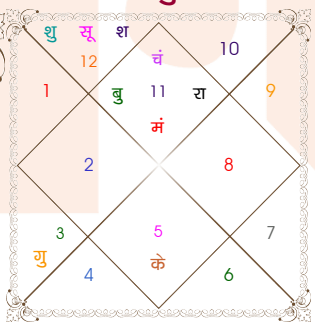

नवमांश कुंडली

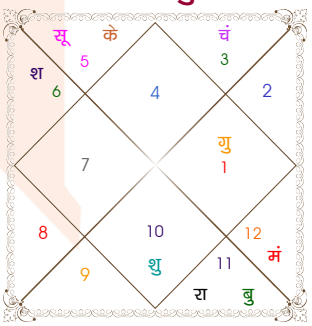

सर्वाष्टकवर्ग

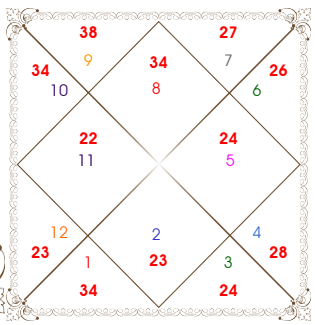

दशमांश कुंडली

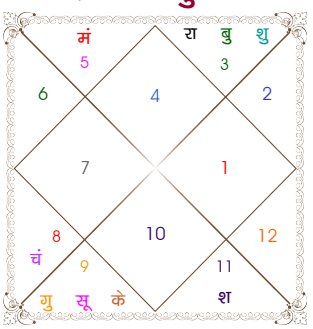

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि सिंह, गण मनुष्य, वर्ण शूद्र, वर्ग सर्प तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "द" या "दा" अक्षर से होगा यथा- दयावती आदि।

आप एक संयमी महिला होंगी तथा इन्द्रियों को नियंत्रण में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को सम्पन्न करने में दक्ष रहेंगी। अपने इस गुण से आप समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा यश प्राप्त करेंगी तथा अन्य लोग आपसे प्रायः प्रसन्न रहेंगे। आप शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में सर्वथा सफल रहेंगी तथा वे भी आपसे हमेशा भयाक्रान्त तथा प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही आप तीक्ष्ण बुद्धि से भी युक्त रहेगी एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आपका अपने पति के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा वे प्रायः आपके वश में रहेंगे तथा कोई भी सांसारिक कार्य बिना आपसे पूछे सम्पन्न करने में असमर्थता महसूस करेंगे। आपके पास धनाभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा अन्यथा इससे सुशोभित ही रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इसके साथ ही आप अत्यन्त ही होशियार तथा विद्धता के गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगी परन्तु आपमें कृपणता के भाव की प्रधानता रहेगी अतः धनसंचय के प्रति रूचिशील रहने के कारण यदा कदा अन्य लोग आपसे असहयोग प्राप्त करेंगे इससे वे आपसे तनिक असन्तुष्ट भी रहेंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आप अपने सम्भाषण में साहसी तथा ओजस्वी वाणी का प्रयोग करेंगी अतः आपसे सभी लोग प्रभावित रहेंगे एवं आपका प्रभुत्व भी स्वीकार करेंगे। लेकिन इसके साथ ही आप हमेशा भय से ग्रस्त रहेंगी। लेकिन अन्य जनों के साथ में आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं स्नेह से युक्त रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी एवं अपने ओजस्वी तथा सार्थक भाषणों से समाज के सभी वर्गो को प्रभावित करने में सफल रहेंगी। आपको जीवन में सुखसंसाधनों का अभाव नहीं रहेगा तथा प्रसन्नतापूर्वक आप इनका उपभोग करती रहेंगी। आप परिवार से युक्त रहेंगी एवं समाज के सभी वर्गो में पूर्ण रूपेण सम्माननीया समझी जाएंगी। परन्तु आप को नींद अधिक आएगी जिससे आपमें आलस्य की वृद्धि होगी फलतः कभी कभी आप बिल्कुल ही निष्क्रिय हो जाएंगी तथा किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में अपने को असमर्थ समझेंगी।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीडा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका ऊंची होगी तथा मुख एवं ललाट भी विस्तृताकार का होगा। आपके हाथ पैर एवं कटिभाग में भी स्थूलता रहेगी। आपके शरीर में कोमलता का अभाव रहेगा परन्तु कृत्रिम साधनों के उपयोग से इससे आपका सौन्दर्य प्रभावित नहीं होगा एवं इसमें पूर्ण आकर्षण बना रहेगा। आप में विद्रोह की भावना भी रहेगी तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगी जिससे अन्य श्रेष्ठ जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपमें क्रोध के भाव की भी प्रवलता रहेगी। धर्म के प्रति आपके मन में

श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक कृत्यों करने के लिए भी उत्सुक रहेंगी। आप में आलस्य का भाव भी रहेगा। साथ ही शिल्प या चित्रकारी में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित हो सकेगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ता में व्याकुल रहेंगी एवं धनाभाव से भी कष्टानुभूति करेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आप नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करेंगी एवं समाज में एक विदुषी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी साथ ही अन्य कई कार्यों को भी आप कुशलतापूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा शान्तिपूर्वक अपने कार्यों को पूरा करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे एवं उनको नष्ट करने में आप सफल रहेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप श्रेष्ठ विदुषी होंगी तथा समाज में ख्याति प्राप्त रहेंगी लेकिन अन्य सज्जन तथा विद्वजनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान करने में असमर्थ रहेंगी अतः अधिकांश लोग आपकी इस प्रवृति से प्रसन्न नहीं रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप अपने जीवन काल में प्रत्येक क्षेत्र में सामान्यतया विजय एवं सफलता ही अर्जित करेंगी। साथ ही आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा एवं अन्य लोगों के लिए यह अनुकरणनीय रहेगा। धनैश्वर्य से आप युक्त रहेंगी। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा इनकी सहायता तथा सेवा के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। पुरूष वर्ग में भी आपका प्रभाव रहेगा एवं इनसे मधुर संबंध रहेंगे यहां तक कि अवसरानुकूल इनकी सेवा तथा सहायता के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपका परिवार विस्तृत रहेगा एवं जाति तथा वर्ग के इष्टकार्य को सम्पन्न करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील तथा तत्पर रहेंगी एवं परिश्रम पूर्वक उसमें सफलता प्राप्त करेंगी अतः इन के मध्य आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित होता रहेगा। इसके साथ ही कई अन्य सद्गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।

बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई भी अधिक रहेगी तथा शारीरिक नसें शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हशंगी। इसके साथ ही मित्रवर्ग के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक उनकी सहायता करती रहेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप प्रारम्भ से ही दानशील प्रवृति से युक्त रहेंगी तथा समय समय पर दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति अपनी इस भावना का अनुपालन करती रहेंगी। साथ ही आप में कृतज्ञता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगी एवं हार्दिक रूप से उनके प्रति आभार भी प्रकट करेंगी। आपकी आखें सुन्दर एवं आकर्षक रहेंगी एवं बुद्धि भी सरलता के भाव से युक्त होगी। इसमें किसी भी प्रकार की कुटिलता या छल प्रपंच का अभाव रहेगा। आप को जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों की भी प्राप्ति होगी एवं सुखपूर्वक आप इनका उपभोग भी करती रहेंगी। इस प्रकार अपने मृदु व्यवहार तथा स्नेहशील स्वभाव के कारण आप समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिकता की भावना से युक्त रहेंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा परन्तु आपमें अभिमानी भाव भी रहेगा अतः इसके प्रदर्शन से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार आप इस प्रवृति का भी पालन करती रहेंगी। आप में शारीरिक बल भी पूर्ण रूप से रहेगा एवं अपने भुजबल से ही कई महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप सिद्ध करेंगी। आप अन्य कई प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को करने में भी दक्ष रहेंगी। इससे आपको सामाजिक सम्मान तथा ख्याति प्राप्त होगी। आप एक विदुषी महिला होंगी एवं आपकी शारीरिक कान्ति व सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त परिवार के लोगों के अलावां अन्य कई लोगों का भी आप पालन करेंगी एवं उन्हे सुख प्रदान करेंगी।

समाज से आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा एवं धनैश्वर्य से भी आप जीवन में युक्त रहेंगी। आपकी आँखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी में आपकी विशेष रूचि रहेगी एवं इस क्षेत्र में आपको विशेष सफलता एवं ख्याति भी अर्जित हो सकेगी। आप गौरवर्ण की महिला होंगी तथा नगर वासियों में आप प्रतिष्ठित एवं गणमान्य रहेंगी एवं सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में धार्मिकता की भावना की पूर्ण प्रधानता रहेगी तथा अधिकांश धार्मिक कृत्यों का आप श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। आप हमेशा अच्छे कार्य को करने में प्रवृत रहेंगी तथा यत्नपूर्वक सत्कार्यों को ही करेंगी जिससे अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आप एक गुणवती महिला भी होंगी एवं विभिन्न प्रकार के सत्वगुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही परिवार की समृद्धि तथा उन्नति प्रदान करने में आपका अत्याधिक सहयोग रहेगा एवं परिवार में आप सर्वदा आदरणीया रहेंगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए एवं नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, तिल, तेल, लोहा, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा अन्यत्र

लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।